فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ

तो अब जान जाओगे[58] कौन खुली गुमराही में है तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर सुब्ह को

مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ یَّاْتِیْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِیْنٍ ﴿٣٠﴾ ع ٢

तुम्हारा पानी ज़मीन में धंस जाए[59] तो वोह कौन है जो तुम्हें पानी ला दे निगाह के सामने बहता[60]

اٰیاتها ٥٢ | ٦٨ سُوْرَةُ الْقَلَمِ مَكِّیَّةٌ ٢ | رکوعاتها ٢

सूरए क़लम मक्किय्या है, इस में बावन आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रहम वाला[1]

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا یَسْطُرُوْنَ ﴿١﴾ مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢﴾ وَاِنَّ

क़लम[2] और उन के लिखे की क़सम[3] तुम अपने रब के फ़ज़्ल से मज्नून नहीं[4] और ज़रूर

لَكَ لَاَجْرًا غَیْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿٣﴾ وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ ﴿٤﴾ فَسَتُبْصِرُ وَ

तुम्हारे लिये बे इन्तिहा सवाब है[5] और बेशक तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है[6] तो अब कोई दम जाता है कि तुम भी देख

یُبْصِرُوْنَ ﴿٥﴾ بِاَیِّیْكُمُ الْمَفْتُوْنُ ﴿٦﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ

लोगे और वोह भी देख लेंगे[7] कि तुम में कौन मज्नून था बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उस की राह

سَبِیْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِیْنَ ﴿٧﴾ فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِیْنَ ﴿٨﴾ وَدُّوْا لَوْ

से बहके और वोह ख़ूब जानता है जो राह पर है तो झुटलाने वालों की बात न सुनना वोह तो इस आरज़ू में हैं कि

58 : या'नी वक़्ते अ़ज़ाब **59 :** और इतनी गहराई में पहुंच जाए कि डोल वग़ैरा से हाथ न आ सके **60 :** कि उस तक हर एक का हाथ पहुंच सके, येह सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही की क़ुदरत में है तो जो किसी चीज़ पर क़ुदरत न रखे उन्हें क्यूं इ़बादत में उस क़ादिरे बरहक़ का शरीक करते हो। **1 :** इस सूरत का नाम सूरए नून व सूरए क़लम है, येह सूरत मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, बावन 52 आयतें, तीन सो 300 कलिमे, एक हज़ार दो सो छप्पन 1256 हर्फ़ हैं। **2 :** अल्लाह तआ़ला ने क़लम की क़सम ज़िक्र फ़रमाई, उस क़लम से मुराद या तो लिखने वालों के क़लम हैं जिन से दीनी दुन्यवी मसालेह़ व फ़वाइद वाबस्ता हैं और या क़लमे आ'ला मुराद है जो नूरी क़लम है और उस का तूल फ़ासिलए ज़मीनो आस्मान के बराबर है। उस ने ब हुक्मे इलाही लौहे महफ़ूज़ पर क़ियामत तक होने वाले तमाम उमूर लिख दिये। **3 :** या'नी आ'माल। बनी आदम के निगहबान फ़िरिश्तों के लिखे की क़सम **4 :** उस का लुत्फ़ो करम तुम्हारे शामिले हाल है, उस ने तुम पर इन्आ़म व एह़सान फ़रमाए, नुबुव्वत और हिक्मत अ़ता की, फ़साहते ताम्मा, अ़क़्ले कामिल, पाकीज़ा ख़साइल, पसन्दीदा अख़्लाक़ अ़ता किये, मख़्लूक़ के लिये जिस क़दर कमालात इम्कान में हैं सब अ़ला वज्हिल कमाल अ़ता फ़रमाए, हर ऐ़ब से ज़ाते आ़ली सिफ़ात को पाक रखा, इस में कुफ़्फ़ार के उस मक़ूले का रद है जो उन्हों ने कहा था "یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْ نُزِّلَ عَلَیْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ"। **5 :** तब्लीग़े रिसालत व इज़्हारे नुबुव्वत और ख़ल्क़ को अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ दा'वत देने और कुफ़्फ़ार की उन बेहूदा बातों और इफ़्तिराओं और ता'नों पर सब्र करने का। **6 :** ह़ज़रत उम्मुल मुअमिनीन आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से दरयाफ़्त किया गया तो आप ने फ़रमाया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم का ख़ुल्क़ क़ुरआन है। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे मकारिमे अख़्लाक़ व महासिने अफ़्आ़ल की तक्मील व तत्मीम के लिये मब्ऊ़स फ़रमाया। **7 :** या'नी अहले मक्का भी जब

www.dawateislami.net

تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ۝٩ وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ۝١٠ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ

किसी त़रह़ तुम नरमी करो[8] तो वोह भी नर्म पड़ जाएं और हर ऐसे की बात न सुनना जो बड़ा क़समें खाने वाला[9] ज़लील बहुत त़ा'ने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता

بِنَمِيْمٍ ۝١١ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝١٢ عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ۝١٣

फिरने वाला[10] भलाई से बड़ा रोकने वाला[11] ह़द से बढ़ने वाला गुनहगार[12] दुरुश्त ख़ू[13] इस सब पर तुर्रा येह कि उस की अस्ल में ख़त़ा[14]

اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّ بَنِيْنَ ۝١٤ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ

इस पर कि कुछ माल और बेटे रखता है जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी जाएं[15] कहता है अगलों की

الْاَوَّلِيْنَ ۝١٥ سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ ۝١٦ اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ

कहानियां हैं[16] क़रीब है कि हम उस की सुअर की सी थूथनी पर दाग़ लगा देंगे[17] बेशक हम ने उन्हें जांचा[18] जैसा उस बाग़

اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ۝١٧ وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ۝١٨

वालों को जांचा था[19] जब उन्हों ने क़सम खाई कि ज़रूर सुब्ह़ होते उस के खेत काट लेंगे[20] और اِنْ شَآءَ الله न कहा[21]

उन पर अ़ज़ाब नाज़िल होगा **8 :** दीन के मुआ़मले में उन की रिआ़यत कर के **9 :** कि झूटी और बात़िल बातों पर क़समें खाने में दिलेर है। मुराद इस से या वलीद बिन मुग़ीरा है या अस्वद बिन यग़ूस या अख़्नस बिन शुरैक़, आगे उस की सिफ़तों का बयान होता है **10 :** ताकि लोगों के दरमियान फ़साद डाले **11 :** बख़ील, न ख़ुद ख़र्च करे न दूसरे को नेक कामों में ख़र्च करने दे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने इस के मा'ना में येह फ़रमाया है कि भलाई से रोकने से मक़्सूद इस्लाम से रोकना है क्यूं कि वलीद बिन मुग़ीरा अपने बेटों और रिश्तेदारों से कहता था कि अगर तुम में से कोई इस्लाम में दाख़िल हुवा तो मैं उसे अपने माल में से कुछ न दूंगा। **12 :** फ़ाजिर बदकार **13 :** बद मिज़ाज बद ज़बान **14 :** या'नी बद गोहर, तो उस से अफ़्आ़ले ख़बीसा का सुदूर क्या अ़जब। मरवी है कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो वलीद बिन मुग़ीरा ने अपनी मां से जा कर कहा कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने मेरे ह़क़ में दस बातें फ़रमाई हैं, नव को तो मैं जानता हूं कि मुझ में मौजूद हैं लेकिन दसवीं बात अस्ल में ख़त़ा होने की इस का ह़ाल मुझे मा'लूम नहीं या तू मुझे सच सच बता दे वरना मैं तेरी गरदन मार दूंगा, इस पर उस की मां ने कहा कि तेरा बाप नामर्द था, मुझे अन्देशा हुवा कि वोह मर जाएगा तो उस का माल ग़ैर ले जाएंगे तो मैं ने एक चरवाहे को बुला लिया, तू उस से है। **फ़ाएदा :** वलीद ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में एक झूटा कलिमा कहा था मज्नून, उस के जवाब में **अल्लाह** तआ़ला ने उस के दस वाक़ेई उ़यूब ज़ाहिर फ़रमा दिये, इस से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم की फ़ज़ीलत और शाने मह़बूबिय्यत मा'लूम होती है। **15 :** या'नी क़ुरआने मजीद **16 :** और इस से उस की मुराद येह होती है कि झूट है और उस का येह कहना इस का नतीजा है कि हम ने उस को माल और औलाद दी। **17 :** या'नी उस का चेहरा बिगाड़ देंगे और उस की बद बात़िनी की अ़लामत उस के चेहरे पर नुमूदार कर देंगे ताकि उस के लिये सबबे आ़र हो, आख़िरत में तो येह सब कुछ होगा ही मगर दुन्या में भी येह ख़बर पूरी हो कर रही और उस की नाक दग़ीली (ऐबदार) हो गई, कहते हैं कि बद्र में उस की नाक कट गई। (كَذَا قِيْلَ خَازِن وَمَدَارِك وَجَلَالَيْن) "وَاعْتُرِضَ عَلَيْهِ بِاَنَّ وَلِيْدًا كَانَ مِنَ الْمُسْتَهْزِئِيْنَ الَّذِيْنَ مَاتُوْا قَبْلَ بَدْر" **18 :** या'नी अहले मक्का को नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم की दुआ़ से जो आप ने फ़रमाई थी कि या रब ! इन्हें ऐसी क़ह़त़ साली में मुब्तला कर जैसी ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में हुई थी, चुनान्चे अहले मक्का क़ह़त़ की ऐसी मुसीबत में मुब्तला किये गए कि वोह भूक की शिद्दत में मुर्दार और हड्डियां तक खा गए और इस त़रह़ आज़्माइश में डाले गए। **19 :** उस बाग़ का नाम ज़रवान था, येह बाग़ सन्आ़ यमन से दो फ़रसंग के फ़ासिले पर सरे राह था, उस का मालिक एक मर्दे सालेह़ था जो बाग़ के मेवे कसरत से फ़ुक़रा को देता था, जब बाग़ में जाता फ़ुक़रा को बुला लेता तमाम गिरे पड़े मेवे फ़ुक़रा ले लेते और बाग़ में बिस्तर बिछा दिये जाते जब मेवे तोड़े जाते तो जितने मेवे बिस्तरों पर गिरते वोह भी फ़ुक़रा को दे दिये जाते और जो ख़ालिस अपना ह़िस्सा होता उस से भी दसवां ह़िस्सा फ़ुक़रा को दे देता, इसी त़रह़ खेती काटते वक़्त भी उस ने फ़ुक़रा के ह़ुक़ूक़ बहुत ज़ियादा मुक़र्रर किये थे, इस के बा'द उस के तीन बेटे वारिस हुए, उन्हों ने बाहम मश्वरा किया कि माल क़लील है कुम्बा बहुत है अगर वालिद की त़रह़ हम भी ख़ैरात जारी रखें तो तंगदस्त हो जाएंगे, आपस में मिल कर क़समें खाईं कि सुब्ह़ तड़के लोगों के उठने से पहले बाग़ चल कर मेवे तोड़ लें, चुनान्चे इर्शाद होता है : **20 :** ताकि मिस्कीनों को ख़बर न हो। **21 :** येह लोग तो क़समें खा कर सो गए।

www.dawateislami.net

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿۱۹﴾ فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ﴿۲۰﴾

तो उस पर[22] तेरे रब की त़रफ़ से एक फेरी करने वाला फेरा कर गया[23] और वोह सोते थे तो सुब्ह़ रह गया[24] जैसे फल टूटा हुवा[25]

فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ﴿۲۱﴾ اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ ﴿۲۲﴾

फिर उन्हों ने सुब्ह़ होते आपस में एक दूसरे को पुकारा कि तड़के (सुब्ह़ सवेरे) अपनी खेती को चलो अगर तुम्हें काटनी है

فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ﴿۲۳﴾ اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ

तो चले और आपस में आहिस्ता आहिस्ता कहते जाते थे कि हरगिज़ आज कोई मिस्कीन तुम्हारे बाग़ में

مِّسْكِيْنٌ ﴿۲۴﴾ وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ﴿۲۵﴾ فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْۤا اِنَّا

आने न पाए और तड़के चले अपने इस इरादे पर क़ुदरत समझते[26] फिर जब उसे देखा[27] बोले बेशक हम

لَضَآلُّوْنَ ﴿۲۶﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿۲۷﴾ قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ

रास्ता बहक गए[28] बल्कि हम बे नसीब हुए[29] उन में जो सब से ग़नीमत था बोला क्या मैं तुम से नहीं कहता था

لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ﴿۲۸﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿۲۹﴾ فَاَقْبَلَ

कि तस्बीह़ क्यूं नहीं करते[30] बोले पाकी है हमारे रब को बेशक हम ज़ालिम थे अब एक

بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ﴿۳۰﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ﴿۳۱﴾

दूसरे की त़रफ़ मलामत करता मुतवज्जेह हुवा[31] बोले हाए ख़राबी हमारी बेशक हम सरकश थे[32]

عَسٰى رَبُّنَاۤ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَاۤ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿۳۲﴾ كَذٰلِكَ

उम्मीद है कि हमें हमारा रब इस से बेहतर बदल दे हम अपने रब की त़रफ़ रग़बत लाते हैं[33] मार

الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۳﴾ ع اِنَّ

ऐसी होती है[34] और बेशक आख़िरत की मार सब से बड़ी क्या अच्छा था अगर वोह जानते[35] बेशक

22 : या'नी बाग़ पर 23 : या'नी एक बला आई ब हुक्मे इलाही आग नाज़िल हुई और बाग़ को तबाह कर गई 24 : वोह बाग़ 25 : और उन लोगों को कुछ ख़बर नहीं, येह सुब्ह़ तड़के उठे 26 : कि किसी मिस्कीन को न आने देंगे और तमाम मेवे अपने क़ब्ज़े में लाएंगे। 27 : या'नी बाग़ को कि उस मेवे का नामो निशान नहीं 28 : या'नी किसी और बाग़ पर पहुंच गए, हमारा बाग़ तो बहुत मेवादार है, फिर जब ग़ौर किया और उस के दरो दीवार को देखा और पहचाना कि अपना ही बाग़ है तो बोले 29 : इस के मनाफ़ेअ़ से मिस्कीनों को न देने की निय्यत कर के। 30 : और इस इरादए बद से तौबा क्यूं नहीं करते और अल्लाह तआ़ला की ने'मत का शुक्र क्यूं नहीं बजा लाते 31 : और आख़िर कार उन सब ने ए'तिराफ़ किया कि हम से ख़त़ा हुई और हम ह़द से मुतजाविज़ हो गए। 32 : कि हम ने अल्लाह तआ़ला की ने'मत का शुक्र न किया और बाप दादा के नेक त़रीक़े को छोड़ा 33 : उस के अ़फ़्वो करम की उम्मीद रखते हैं, उन लोगों ने सिद्क़ो इख़्लास से तौबा की तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इस के इ़वज़ इस से बेहतर बाग़ अ़त़ा फ़रमाया जिस का नाम बाग़े ह़यवान था और उस में कस्रते पैदावार और लत़ाफ़ते आबो हवा का येह आ़लम था कि उस के अंगूरों का एक ख़ोशा एक गधे पर बार किया जाता था। 34 : ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का ! होश में आओ येह तो दुन्या की मार है 35 : अ़ज़ाबे आख़िरत को और उस से बचने

www.dawateislami.net

لِلْمُتَّقِیْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِیْمِ ﴿۳۴﴾ اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِیْنَ

डर वालों के लिये उन के रब के पास[36] चैन के बाग़ हैं[37] क्या हम मुसल्मानों को

كَالْمُجْرِمِیْنَ ﴿۳۵﴾ مَا لَكُمْ ۫ كَیْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿۳۶﴾ اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِیْهِ

मुजरिमों सा कर दें[38] तुम्हें क्या हुवा कैसा हुक्म लगाते हो[39] क्या तुम्हारे लिये कोई किताब है

تَدْرُسُوْنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّ لَكُمْ فِیْهِ لَمَا تَخَیَّرُوْنَ ﴿۳۸﴾ اَمْ لَكُمْ اَیْمَانٌ عَلَیْنَا

जिस में पढ़ते हो कि तुम्हारे लिये उस में जो तुम पसन्द करो या तुम्हारे लिये हम पर कुछ क़समें हैं

بَالِغَةٌ اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْنَ ﴿۳۹﴾ سَلْهُمْ اَیُّهُمْ

क़ियामत तक पहुंचती हुई[40] कि तुम्हें मिलेगा जो कुछ दा'वा करते हो[41] तुम उन से पूछो[42] उन में

مع ۱۵ بِذٰلِكَ زَعِیْمٌ ﴿۴۰﴾ اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ فَلْیَاْتُوْا بِشُرَكَآىٕهِمْ اِنْ كَانُوْا

कौन सा इस का ज़ामिन है[43] या उन के पास कुछ शरीक हैं[44] तो अपने शरीकों को ले कर आएं अगर

صٰدِقِیْنَ ﴿۴۱﴾ یَوْمَ یُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّ یُدْعَوْنَ اِلَی السُّجُوْدِ فَلَا

सच्चे हैं[45] जिस दिन एक साक़ खोली जाएगी (जिस के मा'ना **अल्लाह** ही जानता है)[46] और सज्दे को बुलाए जाएंगे[47] तो न

یَسْتَطِیْعُوْنَ ﴿۴۲﴾ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ وَ قَدْ كَانُوْا

कर सकेंगे[48] नीची निगाहें किये हुए[49] उन पर ख़्वारी चढ़ रही होगी और बेशक दुन्या

یُدْعَوْنَ اِلَی السُّجُوْدِ وَ هُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿۴۳﴾ فَذَرْنِیْ وَ مَنْ یُّكَذِّبُ بِهٰذَا

में सज्दे के लिये बुलाए जाते थे[50] जब तन्दुरुस्त थे[51] तो जो इस बात को[52] झुटलाता है उसे मुझ पर

के लिये **अल्लाह** तआला और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी करते। **36 :** या'नी आख़िरत में **37 शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन ने मुसल्मानों से कहा था कि अगर मरने के बा'द फिर हम उठाए भी गए तो वहां भी हम तुम से अच्छे रहेंगे और हमारा ही दरजा बुलन्द होगा जैसे कि दुन्या में हमें आसाइश है, इस पर येह आयत नाज़िल हुई जो आगे आती है। **38 :** और इन मुख़्लिस फ़रमां बरदारों को उन मुआनिद बाग़ियों पर फ़ज़ीलत न देंगे, हमारी निस्बत ऐसा गुमान फ़ासिद (है) **39 :** जहालत से **40 :** जो मुन्क़तअ़ न हों, इस मज़्मून की **41 :** अपने लिये **अल्लाह** तआला के नज़्दीक ख़ैरो करामत का। अब **अल्लाह** तआला अपने हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ख़िताब फ़रमाता है **42 :** या'नी कुफ़्फ़ार से **43 :** कि आख़िरत में उन्हें मुसल्मानों से बेहतर या उन के बराबर मिलेगा **44 :** जो इस दा'वे में उन की मुवाफ़क़त करें और ज़िम्मेदार बनें **45 :** हक़ीक़त में वोह बातिल पर हैं, न उन के पास कोई किताब जिस में येह मज़्कूर हो जो वोह कहते हैं, न **अल्लाह** तआला का कोई अ़हद, न कोई उन का ज़ामिन न मुवाफ़िक़। **46 :** जुम्हूर के नज़्दीक कश्फ़े साक़ शिद्दत व सुऊबते अम्र से इबारत है जो रोज़े क़ियामत हिसाब व जज़ा के लिये पेश आएगी। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि क़ियामत में वोह बड़ा सख़्त वक़्त है। सलफ़ का येही त़रीक़ा है कि वोह इस के मा'ना में कलाम नहीं करते और येह फ़रमाते हैं कि हम इस पर ईमान लाते हैं और इस से जो मुराद है वोह **अल्लाह** तआला की त़रफ़ तफ़्वीज़ करते हैं। **47 :** या'नी कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन ब त़रीक़े इम्तिहान व तौबीख़। **48 :** उन की पुश्तें तांबे के तख़्ते की त़रह सख़्त हो जाएंगी। **49 :** कि उन पर ज़िल्लत व नदामत छाई हुई होगी। **50 :** और अज़ानों और तक्बीरों में ''حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ'' के साथ उन्हें नमाज़ व सज्दे की दा'वत दी जाती थी **51 :** बा वुजूद इस के सज्दा न करते थे उसी का

www.dawateislami.net

الْحَدِیْثِ ؕ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَیْثُ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَ اُمْلِیْ لَهُمْ ؕ

छोड़ दो[53] क़रीब है कि हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता ले जाएंगे[54] जहां से उन्हें ख़बर न होगी और मैं उन्हें ढील दूंगा

اِنَّ كَیْدِیْ مَتِیْنٌ ﴿۴۵﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿۴۶﴾

बेशक मेरी ख़ुफ़्या तदबीर बहुत पक्की है[55] या तुम उन से उजरत मांगते हो[56] कि वोह चट्टी (तावान) के बोझ में दबे हैं[57]

اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَیْبُ فَهُمْ یَكْتُبُوْنَ ﴿۴۷﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَ لَا تَكُنْ

या उन के पास ग़ैब है[58] कि वोह लिख रहे हैं[59] तो तुम अपने रब के हुक्म का इन्तिज़ार करो[60] और उस

كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَ هُوَ مَكْظُوْمٌ ﴿۴۸﴾ ؕ لَوْ لَاۤ اَنْ تَدٰرَكَهٗ وقف لازم

मछली वाले की तरह न होना[61] जब इस हाल में पुकारा कि उस का दिल घुट रहा था[62] अगर उस के रब की ने'मत

نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَ هُوَ مَذْمُوْمٌ ﴿۴۹﴾ فَاجْتَبٰىهُ رَبُّهٗ

उस की ख़बर को न पहुंच जाती[63] तो ज़रूर मैदान पर फेंक दिया जाता इल्ज़ाम दिया हुवा[64] तो उसे उस के रब ने चुन लिया

فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۵۰﴾ وَ اِنْ یَّكَادُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَیُزْلِقُوْنَكَ

और अपने कुर्बे ख़ास के सज़ावारों (हक़दारों) में कर लिया और ज़रूर काफ़िर तो ऐसे मा'लूम होते हैं कि गोया अपनी बद नज़र लगा कर

بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَ یَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ﴿۵۱﴾ ۘ وَ مَا هُوَ وقف لازم

तुम्हें गिरा देंगे जब कुरआन सुनते हैं[65] और कहते हैं[66] येह ज़रूर अक़्ल से दूर हैं और वोह[67] तो नहीं

नतीजा है जो यहां सज्दे से महरूम रहे। **52 :** या'नी कुरआने मजीद को **53 :** मैं उस को सज़ा दूंगा। **54 :** अपने अ़ज़ाब की त़रफ़, इस त़रह कि बा वुजूद मा'सियतों और ना फ़रमानियों के उन्हें सिह़्ह़त व रिज़्क़ सब कुछ मिलता रहेगा और दम बदम अ़ज़ाब क़रीब होता जाएगा **55 :** मेरा अ़ज़ाब शदीद है। **56 :** रिसालत की तब्लीग़ पर **57 :** और तावान का उन पर ऐसा बारे गिरां है जिस की वज्ह से ईमान नहीं लाते **58 :** ग़ैब से मुराद यहां लौह़े महफ़ूज़ है **59 :** इस से जो कुछ कहते हैं। **60 :** जो वोह उन के ह़क़ में फ़रमाए और चन्दे उन की ईज़ाओं पर सब्र करो। ''قِیْلَ اِنَّهٗ مَنْسُوْخٌ بِاٰیَةِ السَّیْفِ'' **61 :** क़ौम पर ता'जीले ग़ज़ब में और मछली वाले से मुराद ह़ज़रते यूनुस عَلَیْهِ السَّلَام हैं। **62 :** मछली के पेट में ग़म से। **63 :** और अल्लाह तआ़ला उन के उ़ज़्र व दुआ़ को क़बूल फ़रमा कर उन पर इन्आ़म न फ़रमाता **64 :** लेकिन अल्लाह तआ़ला ने रह़मत फ़रमाई **65 :** और बुग़्ज़ो अ़दावत की निगाहों से घूर घूर कर देखते हैं। **शाने नुज़ूल :** मन्क़ूल है कि अ़रब में बा'ज़ लोग नज़र लगाने में शोह़रए आफ़ाक़ थे और उन की येह ह़ालत थी कि दा'वा कर कर के नज़र लगाते थे और जिस चीज़ को उन्हों ने गज़न्द (नुक़्सान) पहुंचाने के इरादे से देखा देखते ही हलाक हो गई, ऐसे बहुत वाक़िआ़त उन के तजरिबे में आ चुके थे, कुफ़्फ़ार ने उन से कहा कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم को नज़र लगाएं तो उन लोगों ने हुज़ूर को बड़ी तेज़ निगाहों से देखा और कहा कि हम ने अब तक न ऐसा आदमी देखा न ऐसी दलीलें देखीं और उन का किसी चीज़ को देख कर ह़ैरत करना ही सितम होता था, लेकिन उन की येह तमाम जिद्दो जह्द कभी मिस्ल उन के और मकाइद (मक्रो फ़रेब) के जो रात दिन वोह करते रहते थे बेकार गई और अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم को उन के शर से महफ़ूज़ रखा और येह आयत नाज़िल हुई। ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया जिस को नज़र लगे उस पर येह आयत पढ़ कर दम कर दी जाए। **66 :** बराहे ह़सद व इ़नाद और लोगों को नफ़रत दिलाने के लिये सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की शान में जब आप को कुरआने करीम पढ़ते देखते हैं **67 :** या'नी कुरआन शरीफ़ या सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم।

www.dawateislami.net

اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۵۲﴾ ع

मगर नसीहत सारे जहां के लिये[68]

آیاتها ٥٢ ﴿٦٩ سُوْرَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ ٧٨﴾ ركوعاتها ٢

सूरए हाक़्क़ह मक्किय्या है, इस में बावन आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

اَلْحَآقَّةُ ۙ﴿۱﴾ مَا الْحَآقَّةُ ۚ﴿۲﴾ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ؕ﴿۳﴾ كَذَّبَتْ

वोह ह़क़ होने वाली[2] कैसी वोह ह़क़ होने वाली[3] और तुम ने क्या जाना कैसी वोह ह़क़ होने वाली[4] समूद और आ़द ने

ثَمُوْدُ وَ عَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ﴿۴﴾ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِیَةِ ﴿۵﴾ وَ اَمَّا عَادٌ

इस सख़्त सदमा देने वाली को झुटलाया तो समूद तो हलाक किये गए ह़द से गुज़री हुई चिंघाड़ से[5] और रहे आ़द

فَاُهْلِكُوْا بِرِیْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِیَةٍ ۙ﴿۶﴾ سَخَّرَهَا عَلَیْهِمْ سَبْعَ لَیَالٍ وَّ ثَمٰنِیَةَ

वोह हलाक किये गए निहायत सख़्त गरजती आंधी से वोह उन पर कुव्वत से लगा दी सात रातें और आठ

اَیَّامٍ ۙ حُسُوْمًا ۙ فَتَرَى الْقَوْمَ فِیْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ

दिन[6] लगातार तो उन लोगों को उन में[7] देखो पिछड़े (मरे) हुए[8] गोया वोह खजूर के डंड (सूखे तने)

خَاوِیَةٍ ۚ﴿۷﴾ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِیَةٍ ﴿۸﴾ وَ جَآءَ فِرْعَوْنُ وَ مَنْ قَبْلَهٗ

हैं गिरे हुए तो तुम उन में किसी को बचा हुवा देखते हो[9] और फ़िरऔ़न और उस से अगले[10]

وَ الْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ۚ﴿۹﴾ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً

और उलटने वाली बस्तियां[11] ख़त़ा लाए[12] तो उन्हों ने अपने रब के रसूलों का हुक्म न माना[13] तो उस ने उन्हें बढ़ी चढ़ी

68 : जिन्नों के लिये भी और इन्सानों के लिये भी या ज़िक्र ब मा'ना फ़ज़्लो शरफ़ के है इस तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तमाम जहानों के लिये शरफ़ हैं इन की त़रफ़ जुनून की निस्बत करना कूर बात़िनी है। (مدارک) 1 : सूरए हाक़्क़ह मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, बावन 52 आयतें, दो सो छप्पन 256 कलिमे, एक हज़ार चार सो तेईस 1423 ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी क़ियामत जो ह़क़ व साबित है और इस का वुक़ूअ़ यक़ीनी व क़त़ई है जिस में कोई शक नहीं। 3 : या'नी वोह निहायत अ़जीब व अ़ज़ीमुश्शान है। 4 : जिस के अहवाल व अह़वाल और शदाइद तक फ़िक्रे इन्सानी का त़ाइर परवाज़ नहीं कर सकता। 5 : या'नी सख़्त होलनाक आवाज़ से 6 : चहार शम्बा से चहार शम्बा (बुध से बुध) तक, आख़िर माहे शव्वाल में निहायत तेज़ सरदी के मौसिम में 7 : या'नी उन दिनों में 8 : कि मौत ने उन्हें ऐसा ढा दिया 9 : कहा गया है कि आठवें रोज़ जब सुब्ह़ को वोह सब लोग हलाक हो गए तो हवाओं ने उन्हें उड़ा कर समुन्दर में फेंक दिया और एक भी बाक़ी न रहा। 10 : उस से भी पहली उम्मतों के कुफ़्फ़ार 11 : ना फ़रमानियों की शामत से मिस्ल क़ौमे लूत़ की बस्तियों के, येह सब 12 : अफ़्आ़ले क़बीह़ा व मआ़सी व शिर्क के मुरतकिब हुए 13 : जो उन की त़रफ़ भेजे गए थे।

www.dawateislami.net